4

कस्मात् किं शिक्षेत?

मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी मननशीलता। अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य अपने चारों ओर फैले परिवेश को, वहाँ के जड़ एवं चेतन पदार्थों को तथा अपने से भिन्न प्राणियों को अधिक सूक्ष्मता से देखता है। उन सब का निरीक्षण कर उन से कुछ न कुछ शिक्षा प्राप्त करने की चेष्टा करता है। इस सृष्टि में मानव अपने आविर्भाव के समय से ही अनेक प्रकार के पशु-पक्षियों से घिरा रहा है। एक लम्बी अवधि तक हिंसक एवम् अहिंसक-दोनों प्रकार के जन्तुओं को निकटता से हमारे पूर्वज देखते आ रहे हैं। उनकी चेष्टाओं, प्रवृत्तियों तथा मनोभावों का दैनिक निरीक्षण कर उन्हें लगा कि इन पशुओं से भी कुछ न कुछ शिक्षा ली जा सकती है। पशुओं में अनेक गुण होते हैं, उन गुणों को व्यवहार में अपनाने से मनुष्य का जीवन सफल हो सकता है। अतः संस्कृत-साहित्य में ऐसे अनेक श्लोक लिखे गये हैं, जो जड़ एवं चेतन जगत् के अनुकरणीय गुणों का वर्णन करते हैं। वे मनुष्य को इस बात के लिए प्रेरित करते हैं कि वह इनसे भी शिक्षा प्राप्त करे। आइये, देखें कि इन श्लोकों में क्या कहा गया है?

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान्/भवती

- विविधपशूनां गुणानाम् उल्लेखं करिष्यति;
- विभिन्नपशुपक्षिभ्यः प्राप्तां शिक्षां स्वशब्देषु वर्णयिष्यति;
- प्राकृतिकतत्त्वेभ्यः प्रदत्तां शिक्षां लेखिष्यति;
- पद्यांशानाम् सम्बद्धवाक्यांशैः सह मेलनं करिष्यति;
- अन्वयेषु श्लोकान् पठित्वा रिक्तस्थानपूर्तिं करिष्यति;
- स्वरसन्धेः भेदान् ज्ञात्वा सधिच्छेदं करिष्यति।

टिप्पणी

- पद्यांशानां समुचितभावार्थस्य चयनं करिष्यति;
- 'क्त' प्रत्ययस्य स्थाने' 'क्तवतु' प्रत्ययं योजयित्वा वाच्यपरिवर्तनं करिष्यति;

क्रियाकलाप: 4.1

'क' स्तम्भे कानिचित् चित्राणि दत्तानि।

'ख' स्तम्भे शिक्षाणां सङ्कलनं लिखितम्।। चित्रै: सह शिक्षाया: मेलनं करोतु।

'क' स्तम्भ:

(i)
दीपक का चित्र

(ii) 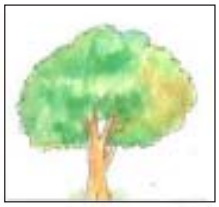
वृक्ष का चित्र

(iii)
कोयल का चित्र

(iv)
चींटी का चित्र

(v)
गुलाब का चित्र

'ख' स्तम्भ:

(क) उद्यमेनैव कार्याणि सिध्यन्ति।

(ख) तमसो मा ज्योतिर्गमय।

(ग) परोपकार: कर्तव्य: प्राणैरपि धनैरपि।

(घ) मधुरं वद कल्याणि वचने का दरिद्रता।

(ड.) शुभकर्मणां सुगन्ध: सर्वत्र वाति।

टिप्पणी

आइये, अब इसी प्रकरण की कुछ और शिक्षाएँ प्राप्त करने के लिए मूलपाठ पढ़ें।

4.1 इदानीं मूलपाठं पठामः

प्रथमः एकांशः

प्रभूतमल्पकार्यं वा यो नरः कर्तुमिच्छति।
सर्वारम्भेण तत्कुर्यात् सिंहादेकं प्रकीर्तितम्।।1।।
सर्वेन्द्रियाणि संयम्य बकवत् पतितो जनः।
कालदेशोपपन्नानि सर्वकार्याणि साधयेत् ।।2।।
बह्वाशी स्वल्पसंतुष्टः सुनिद्रः शीघ्रचेतनः।
प्रभुभक्तश्च शूरश्च ज्ञातव्याः षट् शुनः गुणाः ।।3।।
अविश्रमं वहेद् भारं शीतोष्णं च न विन्दति।
ससंतोषस्तथा नित्यं त्रीणि शिक्षेत गर्दभात् ।।4।।

द्वितीयः एकांशः

युद्धं च प्रातरुत्थानं भोजनं सह बन्धुभिः।
स्त्रियमापद्गतां रक्षेच्चतुः शिक्षेत कुक्कुटात्।।5!!
अणुभ्यश्च महद्भ्यश्च
शास्त्रेभ्यः कुशलो नरः
सर्वतः सारम् आदद्यात्
पुष्पेभ्यः इव षट्पदः ।।6।।
भूतैराक्रम्यमाणोऽपि
धीरो दैववशानुगैः,
तद् विद्वान्न चलेन्मार्गाद्
अन्वशिक्षम् क्षितेर्व्रतम् ।।7।।
यद्यपि चन्दनविटपो विधिना
फलकुसुमविवर्जितो विहितः।

शब्दार्था :
प्रभूतम् = अत्यधिक, अल्पकार्यम् = कम कार्य , कुर्यात् = करे, कर्तुमिच्छति = करना चाहता है, सर्वारम्भेण = पूरे उत्साह से, प्रकीर्तितम् = प्रसिद्ध है, सर्वेन्द्रियाणि = सब इन्द्रियों को, संयम्य = नियन्त्रित करके, बकवत् = बगुले की तरह, पतितः = गिरा हुआ, कालदेशोपपन्नानि = समय एवं स्थान (देश एवं काल) के अनुरूप, सर्वकार्याणि = सब कामों को, साधयेत् = सिद्ध करे, बह्वाशी = बहुत अधिक खाने वाला, स्वल्पसंतुष्टः = थोड़े से ही संतुष्ट होने वाला, सुनिद्रः = जल्दी ही सो जाने वाला,, शीघ्रचेतनः = बहुत जल्दी (तुरन्त) जाग जाने वाला, शुनः = कुत्ते के, प्रभुभक्तः = स्वामी का भक्त, शूरः = वीर, ज्ञातव्याः = जानने चाहियें, अविश्रमम् = विश्राम रहित, बिना रुके, शीतोष्णम् = सर्दी-गरमी, सुख-दुःख, विन्दति = पाता है, अनुभव करता है, ससंतोषः = संतुष्टिपूर्वक, गर्दभात् = गदहे से, शिक्षेत = सीखे, प्रातरुत्थानम् = प्रातः काल में उठना, आपद्गताम् = आपत्तिग्रस्त को, चतुः = चार (शिक्षाओं को), अणुभ्यः = छोटों से, महद्भ्यः = बड़ों से, शास्त्रेभ्यः = शास्त्र ग्रन्थों से, पुष्पेभ्यः = फूलों से, षट्पदः = भँवरा, अन्वशिक्षम् = मैंने सीखा, आक्रम्यमाणः = आक्रमण किया जाता हुआ भी, मार्गात् = न्यायपूर्ण रास्ते से, न चलेत् = विचलित न होवे, अन्वशिक्षम् = मैंने सीखा, क्षितेः = पृथ्वी से, चन्दनविटपः = चन्दन का वृक्ष, फलकुसुमविवर्जितः = फलों एवं फूलों से रहित भी, निजवषुषा = अपने शरीर से, सन्तापं = कष्ट को, आतपे = धूप में, सत्पुरुषाः = सज्जन पुरुष

निजवपुषैव परेषां
तथापि सन्तापमपहरति ।।8।।
छायामन्यस्य कुर्वन्ति,
तिष्ठन्ति स्वयमातपे।
फलान्यपि परार्थाय,
वृक्षाः सत्पुरुषा इव ।।9।।

टिप्पणी

आतपे = धूप में, परार्थाय = दूसरों के लिए, सत्पुरुषाः इव = सज्जनों के समान

बोधप्रश्नाः

1. कोष्ठकात् शुद्धम् उत्तरं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

क. जनः सर्वकार्याणि.....कुर्यात्। (सर्वारम्भेण/अल्पप्रयत्नेन)

ख. सिंहात्.....प्रकीर्तितम्। (एकम्/द्वे)

ग. सर्वेन्द्रियाणि.....जनः कार्यम् साधयेत्। (उन्मुच्य/संयम्य)

घ. शुनिः.....गुणाः भवन्ति। (चत्वारः/षट्)

ङ भोजनं.....सह कुर्यात् (शत्रुभिः/बन्धुभिः)

2. 'क' स्तम्भस्य पङ्क्तिभिः सह 'ख' स्तम्भस्य पङ्क्तयः योज्यन्ताम्-

'क'	'ख'
(i) प्रभूतमल्पकार्यं वा	(क) सुनिद्रः शीघ्रचेतनः
(ii) कालदेशोपपन्नानि	(ख) चतुः शिक्षेत कुक्कुटात्
(iii) प्रभुभक्तश्च शूरश्च	(ग) यो नरः कर्तुमिच्छति
(iv) स्त्रियमापद्गतां रक्षेत्	(घ) ज्ञातव्याः षट् शुनो गुणाः
(v) बह्वाशी स्वल्पसंतुष्टः	(ङ) सर्वकार्याणि साधयेत्

3. रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत

(i) चन्दनः.....परेषां सन्तापम् अपहरति।

(ii) सर्वतः.....आदद्यात्।

(iii) विद्वान् न चलेत्.....।

(iv) अविश्रमं वहेद्.....।

(v) वृक्षाः.....इव।

टिप्पणी

4.2 अधुना पाठम् अवगच्छामः

4.2.1 प्रथमः एकांशः

01 श्लोकतः ..... 04 पर्यन्तम्

प्रभूतमल्पकार्यं वा यो नरः कर्तुमिच्छति।
सर्वारम्भेण तत्कुर्यात् सिंहादेकं प्रकीर्तितम्।।1।।

अन्वयः– यः नरः अल्पकार्यम् प्रभूतम् वा कर्तुम् इच्छति, सर्वारम्भेण तत् कुर्यात्, सिंहात्, एकम् प्रकीर्तितम्।

व्याख्याः- कार्य चाहे कम हो या बहुत अधिक, यदि मनुष्य उसे पूरा करना चाहता है तो उसे उस कार्य को पूरा करने में अपना पूरा बल लगा देना चाहिए। सिंह से हमें यह एक शिक्षा मिलती है। सिंह का गुण है कि जब वह शिकार पर निकलता है तो उसका पूरा ध्यान शिकार की ओर रहता है तथा वह अपने पूरे बल का प्रयोग करता है। इसी प्रकार हमारा लक्ष्य चाहे छोटा हो या बड़ा, हमें उसे पूरा करने में सम्पूर्ण शक्ति लगा देनी चाहिए। जीवन में सफलता प्राप्ति की यह एक बड़ी कुञ्जी है।

सर्वेन्द्रियाणि संयम्य बकवत् पतितो जनः।
कालदेशोपपन्नानि सर्वकार्याणि साधयेत्।।2।।

अन्वयः- बकवत् सर्वेन्द्रियाणि संयम्य पतितः जनः कालदेशोपपन्नानि सर्वकार्याणि साध येत्।

व्याख्याः- बगुला जब मछली का शिकार करता है तब वह जल में स्थित होकर अपनी समस्त इन्द्रियों को संयमित कर लेता है। देश तथा काल के अनुरूप अर्थात् लक्ष्य के सम्पादन के लिए आवश्यक सभी मुद्राओं/चेष्टाओं का पालन करता है। इसी प्रकार मनुष्य को भी अपना ध्यान अन्य सभी वस्तुओं से हटा कर पूरे ध्यान से तथा परिस्थिति के अनुरूप सभी आवश्यक कार्यों को करते हुए अपना लक्ष्य सिद्ध करना चाहिये।

बह्वाशी स्वल्पसंतुष्टः सुनिद्रः शीघ्रचेतनः।
प्रभुभक्तश्च शूरश्च ज्ञातव्याः षट् शुनो गुणाः।।3।।

अन्वयः- बह्वाशी, स्वल्पसन्तुष्टः, सुनिद्रः, शीघ्रचेतनः, प्रभुभक्तः शूरः च (इति) शुनः षट् गुणाः ज्ञातव्याः।

व्याख्याः- इस श्लोक में कहा गया है कि बहुत भोजन करने का स्वभाव होते हुए भी थोड़ा मिलने पर संतुष्टि, शीघ्र नींद में चले जाने का स्वभाव होते हुए भी तुरन्त उठ कर चेतन हो जाना, स्वामिभक्ति तथा शूरता–ये सभी 6 गुण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं जो कि कुत्ते में पाए जाते हैं। सन्तोष को परम सुख कहा गया है, अतः शीघ्र सन्तुष्ट होने वाला व्यक्ति

टिप्पणी

कभी दु:खी नहीं होता। इसी प्रकार व्यक्ति में स्वामिभक्ति तथा विश्वसनीयता होनी चाहिए। अनन्त काल से मनुष्य के सहचर कुत्ते के ये गुण वस्तुत: अनुकरणीय हैं।

अविश्रमं वहेद् भारं शीतोष्णं च न विन्दति।
ससंतोषस्तथा नित्यं त्रीणि शिक्षेत गर्दभात्।।4।।

अन्वय:- अविश्रमम् भारम् वहेत्, शीतोष्णम् च न विन्दति तथा ससंतोष:- त्रीणि गर्दभात् शिक्षेत।

व्याख्या- यद्यपि गधा प्राणिजगत् का निरीह प्राणी है, परन्तु उस के कई गुण प्रशंसनीय हैं। बिना विश्राम किए लगातार अपने काम में लगे रहना, सर्दी-गर्मी की भी परवाह न करना तथा जो मिल जाए उसी में संतुष्ट रहना- गधे के ये गुण वस्तुत: प्रशंसनीय हैं। अपने कार्य में जुटे रहना ही सफलता की एकमात्र कुञ्जी है। इसके साथ यदि मनुष्य परिस्थितिजन्य अन्य कष्टों को भूलकर अपना कार्य करता रहे- तो उसे कोई भी शक्ति पराभूत नहीं कर सकती। इस श्लोक में गधे के यही तीन अनुसरणीय गुण बताए गए हैं।

व्याकरणबिन्दव:

सन्धिच्छेद:	सिंहात्	+	एकम्	=	सिंहादेकम्
	सर्व	+	इन्द्रियाणि	=	सर्वेन्द्रियाणि
	कालदेश	+	उपपन्नानि	=	कालदेशोपपन्नानि
	बहु	+	आशी:	=	बह्वाशी:
	शूर:	+	च	=	शूरश्च
	शीत	+	उष्णम्	=	शीतोष्णम्
	ससंतोष:	+	तथा	=	ससंतोषस्तथा

टिप्पणी

कालदेशोपपन्नानि = समय और स्थान के लिये उचित, अर्थात् जैसा समय हो, अथवा जैसी परिस्थिति हो तदनुसार बगुला अपनी लक्ष्यसिद्धि में जुट जाता है।

शीतोष्णम् = शीतम् च उष्णम् च शीतोष्णम्-सर्दी हो या गर्मी, गधा निरन्तर कार्यशील रहता है। सर्दी और गर्मी की परवाह नहीं करता।

विशेष- सिंह से अदम्य उत्साह, बगुले से इन्द्रियों का संयम, समय और परिस्थिति के अनुसार कार्य करना, कुत्ते से स्वामिभक्ति, थोड़े से ही सन्तोष करना, चेतनशीलता, वीरता, और गधे से सर्दी गर्मी की परवाह किये बिना निरन्तर बिना विश्राम किये कार्य करते जाना, ये गुण सीखने चाहिये।

टिप्पणी

पाठगतप्रश्नाः 4.1

1. शुद्धं कथनं (√) इति चिह्नेन अशुद्धं (×) इति चिह्नेन चिह्नाङ्कितं कुरुत

(i) नरः अल्पम् अपि कार्यम् उत्साहेन कुर्यात् (.....)

(ii) गर्दभः शीतोष्णं सहते परन्तु सन्तुष्टः न भवति। (.....)

(iii) श्वा स्वामिभक्तो भवति। (.....)

(iv) बकः समयानुसारं कार्याणि साधयति। (.....)

(v) श्वा अधिकेन एव सन्तुष्टः भवति। (.....)

2. एकं शुद्धम् कथनं चिह्नाङ्कितं क्रियताम्-

1. सर्वे पशवः पक्षिणश्च मूर्खा भवन्ति।
2. पशुषु पक्षिषु चापि बुद्धिः भवति।
3. सिंहात् न कापि शिक्षा मिलति।
4. गर्दभः संतुष्टो न भवति

4.2.2 द्वितीयः एकांशः

05 श्लोकतः ..... 09 पर्यन्तम्

युद्धं च प्रातरुत्थानं भोजनं सह बन्धुभिः
स्त्रियमापद्गतां रक्षेच्चतुः शिक्षेत कुक्कुटात् ।।5।।

अन्वयः- प्रातः उत्थानम्, युद्धम्, बन्धुभिः सह भोजनम्, आपद्गतां स्त्रियं रक्षेत् (इति) कुक्कुटात् चतुः शिक्षेत।

व्याख्या- प्रतिदिन ब्राह्म मुहूर्त में जागना, आवश्यकता होने पर युद्ध करना, बन्धु-बान्धवों के साथ भोजन करना, स्त्री के आपत्तिग्रस्त होने पर उसकी रक्षा करना, ये मुर्गे के चार स्वाभाविक गुण होते हैं। कवि का अभिप्राय है कि मनुष्य को मुर्गे से इन गुणों की शिक्षा लेनी चाहिए। युद्ध के समय मुख न मोड़ना वीरता की पहचान है। प्रातःकाल का जागरण मनुष्य के सभी कार्यों के लिए परम लाभप्रद होता है। बन्धुओं के साथ भोजन से तात्पर्य है मनुष्य का सामाजिक होना।

स्त्री की रक्षा करना और विशेषकर आपद्ग्रस्त स्त्री की रक्षा करना, सभी संस्कृतियों में समानरूप से आदृत है। इन नियमों के पालन से मनुष्य लोकप्रिय एवं एक जिम्मेदार नागरिक बन सकता है। अतः इन गुणों, एवम् इन शिक्षाओं को कुक्कुट से सीखना चाहिए।

टिप्पणी

अणुभ्यश्च महद्भ्यश्च शास्त्रेभ्यः कुशलो नरः।
सर्वतः सारमादद्यात् पुष्पेभ्य इव षट्पदः ।।6।।

अन्वयः- कुशलः, महद्भ्यः अणुभ्यः च, शास्त्रेभ्यः, पुष्पेभ्यः षट्पद इव, सर्वतः सारम् आदद्यात्।

व्याख्या- इस श्लोक में बताया गया है कि कुशल अर्थात् बुद्धिमान् व्यक्ति वही होता है जो सभी शास्त्रों से, चाहे वे छोटे हों या बड़े हों - उनसे सारभूत शिक्षा उसी प्रकार ग्रहण करे, जिस प्रकार षट्पद अर्थात् भ्रमर तरह-तरह के फूलों से रस ग्रहण करता है। जैसे भँवरा किसी एक फूल का ही रस नहीं पीता, केवल एक पर ही आश्रित नहीं रहता उसी प्रकार व्यक्ति को भी सभी शास्त्रों से, ग्रन्थों से, छोटे या बड़े सभी व्यक्तियों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। किसी को भी उपेक्षा की दृष्टि से न देखते हुए व्यक्ति का लक्ष्य यही होना चाहिये कि उस में सारग्रहण की प्रवृत्ति बनी रहे।

भँवरे के 6 पैर होने के कारण उसे षट्पद तथा उस के नामान्तर 'भ्रमर' में दो बार 'र' वर्ण के आने से संस्कृत भाषा में उसे 'द्विरेफ' कहा जाता है।

भूतैराक्रम्यमाणोऽपि धीरो दैववशानुगैः।
तद्विद्वान्न चलेन्मार्गाद् अन्वशिक्षम् क्षितेर्व्रतम् ।।7।।

अन्वयः- दैव-वशानुगैः, भूतैः आक्रम्यमाणः अपि धीर : विद्वान् मार्गात् न चलेत्, क्षितेः व्रतम् अन्वशिक्षम्।

व्याख्या- इस श्लोक में कवि कहता है कि कभी-कभी ऐसा होता है कि कार्य सम्पादित करते समय मनुष्य के मार्ग में बाधाएँ आ जाती हैं। ये बाधाएं प्राकृतिक अथवा किसी व्यक्ति विशेष द्वारा भाग्यवश लाई जाती हैं। परन्तु बुद्धिमान् उनसे विचलित न होवे। लक्ष्य को प्राप्त करने के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का धैर्य से सामना करते हुए व्यक्ति उसी प्रकार अडिग रहे जिस प्रकार यह धरती अपना व्रत– सूर्य के चारों ओर घूमने के नियम को नहीं छोड़ती। भूकम्प, तूफान, बाढ़ आदि अनेक प्राकृतिक आपदाओं के आने पर भी पृथिवी का घूमना लगातार चलता ही रहता है। जड़ पृथिवी से यह शिक्षा मैंने ग्रहण की।

यद्यपि चन्दनविटपो विधिना फलकुसुमविवर्जितो विहितः।
निजवपुषैव परेषां तथापि सन्तापमपहरति ।।8।।

अन्वयः– यद्यपि विधिना चन्दनविटपः फलकुसुमविवर्जितः विहितः तथापि निजवपुषा एव परेषां सन्तापम् अपहरति।।

टिप्पणी

व्याख्या- चन्दन के वृक्ष पर फल फूल नहीं लगते फिर भी वह अपनी काष्ठमयी काया से ही लोगों के सन्ताप को दूर करता है। इसी प्रकार चाहे हमारे पास बहुत अधिक धन सम्पत्ति या वैभव इत्यादि न हो तथापि हमें अपने शरीर से ही दूसरों के कष्टों को दूर करना चाहिये। सेवा से बड़ी कोई ईश्वर-भक्ति नहीं है। अतः चन्दन हमें यही शिक्षा देता है कि बिना किसी साधन के भी हम दूसरों की सेवा करें और अपने जीवन को धन्य बनायें।

छायामन्यस्य कुर्वन्ति, तिष्ठन्ति स्वयमातपे।
फलान्यपि परार्थाय, वृक्षा सत्पुरुषा इव ।।9।।

अन्वयः - वृक्षाः सत्पुरुषाः इव स्वयम् आतपे तिष्ठन्ति अन्यस्य च (कृते) छायां कुर्वन्ति, फलानि अपि परार्थाय (सन्ति)।

व्याख्या- वृक्ष स्वयं सारे दिन धूप में खड़े रहकर दूसरों को छाया देते हैं। उनके तो फल भी दूसरों के लिये ही होते हैं। इसी प्रकार सज्जन मनुष्य भी स्वयं कष्ट सहकर दूसरों को आराम पहुँचाना अपना कर्तव्य समझते हैं। उनकी सभी सम्पत्ति भी समाज के लिये ही समर्पित होती है। अतः हमें वृक्षों से यही सीखना चाहिये कि अपने आप कष्ट सहकर भी दूसरों का कल्याण करें और अपना समस्त धन-ऐश्वर्य दूसरों के लिये प्रयोग में लायें। त्याग से ही धन ऐश्वर्य आदि सुरक्षित रहता है।

सन्धिविच्छेदः

प्रातः	+	उत्थानम्	=	प्रातरुत्थानम्
रक्षेत्	+	चतुः	=	रक्षेच्चतुः
अणुभ्यः	+	च	=	अणुभ्यश्च
महद्भ्यः	+	च	=	महद्भ्यश्च
भूतैः+आक्रम्यमाणः	+	अपि	=	भूतैराक्रम्यमाणोऽपि
विद्वान्	+	न	=	विद्वान्न
चलेत्	+	मार्गात्	=	चलेन्मार्गात्
क्षितेः	+	व्रतम्	=	क्षितेर्व्रतम्
निजवपुषा	+	एव	=	निजवपुषैव
फलानि	+	अपि	=	फलान्यपि
सत्पुरुषाः	+	इव	=	सत्पुरुषा इव

टिप्पणी

पाठगतप्रश्नाः 4.2

1. **एकं शुद्धं कथनं (√) चिह्नाङ्कितं क्रियताम्।**

   (क) नरः केवलं महद्भ्यः शास्त्रेभ्यः सारम् आदद्यात्।

   (ख) नरः केवलम् अणुभ्यः सारम् आदद्यात्।

   (ग) नरः सर्वतः सारम् आदद्यात्।

   (घ) भ्रमरः पुष्पेभ्यः गन्धं गृह्णाति।

2. **कोष्ठकात् शुद्धम् उत्तरं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।**

   (क) कुशलो नरः सर्वतः.....आदद्यात्। (सारम्/फलानि)

   (ख) विद्वान्.....न प्रविचलेत्। (मार्गाद्/कुमार्गाद्)

   (ग) भोजनं.....सह कुर्यात्। (बन्धुभिः / शत्रुभिः)

   (घ) क्षितेः.....अन्वशिक्षम्। (व्रतम् /सारम्)

3. **संस्कृतेन उत्तराणि लिखत।**

   (क) चन्दनवृक्षः केन परसन्तापम् अपहरति?

   (ख) षट्पदः पुष्पेभ्यः किं गृह्णाति?

   (ग) नरः क्षितेः कां शिक्षां गृह्णीयात्?

   (घ) किं जडपदार्थाः अपि अस्मभ्यं शिक्षां ददति?

किमधिगतम्?

- संसारे कोऽपि जीवः तुच्छः नास्ति। सर्वेषु पशुषु पक्षिषु वृक्षेषु च गुणाः सन्ति।
- अस्माभिः सर्वदा सर्वेभ्यः सारं ग्रहीतुम् उद्यतैः भवितव्यम्।
- येषां समीपे किमपि नास्ति तेऽपि स्वशरीरेण एव परोपकारं कुर्वन्ति। अतः अस्माभिः सर्वदा परहितं करणीयम्।
- यथा पृथिवी सर्वाः बाधाः सहमाना स्वकार्ये संलग्ना वर्तते तथैव अस्माभिः अपि सर्वदा स्वकर्तव्यस्य पालनं कर्तव्यम्।
- एतादृशानां पद्यानां संग्रहः अस्माभिः कर्तव्यः।

टिप्पणी

योग्यताविस्तारः

(क) ग्रन्थपरिचयः

प्रस्तुत पाठ में पहले पाँच श्लोक चाणक्यनीति से, अगले दो श्रीमद्भागवतपुराण से तथा अन्तिम दो सुभाषितरत्नभाण्डागार से लिये गये हैं। चाणक्यनीति चाणक्य द्वारा लिखित नीतिग्रन्थ है जिसमें 17 अध्यायों में 333 श्लोक नीतिशिक्षाओं से ओतप्रोत हैं। श्रीमद्भागवतपुराण में 12 स्कन्ध हैं जिनमें 18,000 श्लोकों में भगवान् कृष्ण के जीवन की झांकियाँ प्रस्तुत की गई हैं। यह पुराण ज्ञान विज्ञान का भण्डार है। सुभाषितरत्नभाण्डागार सुभाषितों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है। पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, जातकमाला इत्यादि ग्रन्थों से भी हम इसी प्रकार की शिक्षाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

(ख) भावविस्तारः

पाठ में संकलित पद्यों में वर्णित सूक्तियों के समानान्तर इन ग्रन्थों में अनेक सूक्तियाँ हैं जिनसे हमें इसी प्रकार की शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं। उनमें से कुछ सूक्तियाँ यहाँ दी जा रही हैं:-

+ गुणैः उत्तमतां याति नोच्चैरासनसंस्थितः।

  प्रासादशिखरस्थोऽपि काकः किं गरुडायते।।
+ छिन्नोऽपि चन्दनतरुः न जहाति गन्धम्।
+ दग्धं दग्धं पुनरपि पुनः काञ्चनं कान्तवर्णम्।
+ यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्।
+ परापवादसस्येभ्यः गां चरन्तीं निवारय।
+ साधवः प्रतिपन्नार्थात् न चलन्ति कदाचन।
+ सुतप्तमपि पानीयं पुनर्गच्छति शीतताम्।
+ शैत्यं हि यत्सा प्रकृतिर्जलस्य।
+ न निम्बवृक्षः मधुरत्वमेति।
+ विद्या कामदुघा धेनुः।
+ विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।

टिप्पणी

(ग) भाषाविस्तारः

सन्धिः

वर्णों के परस्पर मिलने से उनमें जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं। सन्धि करने के लिए प्रथम शब्द के अन्तिम वर्ण तथा द्वितीय शब्द के प्रथम वर्ण को मिलाया जाता है। प्रथम शब्द को पूर्वपद और द्वितीय शब्द को उत्तरपद कहते हैं।

सन्धि के भेद

सन्धि के तीन भेद हैं–

स्वर सन्धिः, स्वर + स्वर; वधू + उत्सवः = वधूत्सवः (दीर्घसन्धिः)

व्यंजनसन्धिः, व्यंजन + स्वर/व्यंजन   निर् + रोगः = नीरोगः (रेफलोप एवं दीर्घ)

विसर्गसन्धिः, विसर्ग + स्वर/व्यंजन   धर्मः रक्षति = धर्मो रक्षति (विसर्ग को उ)

ध्यातव्य

यहां पर स्वर सन्धि एवं व्यञ्जन सन्धि के विषय में चर्चा की जाएगी। स्वर सन्धि के अन्तर्गत हम दीर्घ तथा यण् सन्धि के विषय में तथा व्यञ्जन सन्धि के अन्तर्गत जश्त्व सन्धि के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

स्वरसन्धिः

स्वर के सामने स्वर वर्ण आने पर जो विकार होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। इस सन्धि के पांच भेद हैं, दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण् और अयादि।

दीर्घसन्धिः

1. अ, इ, उ के बाद समान वर्ण आने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ स्वर हो जाता है:–

   अ/आ + अ/आ = आ, वा + अतिथिपूजनम् = वातिथिपूजनम्

2. इ/ई + इ/ई = ई   कपि + ईश्वरः = कपीश्वरः

3. उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ   गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः

यण् सन्धिः– (य्, व्, र्, ल्)

नियम– ह्रस्व या दीर्घ, इ, उ, ऋ, लृ के बाद किसी असमान स्वर के आने पर इ का 'य्', उ का 'व्', ऋ का 'र्' तथा लृ का 'ल्' हो जाता है– इको यणचि' (पा. 6.1.77)

टिप्पणी

(i) यदि + अपि = यद्यपि

(ii) इति + आदिः = इत्यादिः

(iii) सु + आगतम् = स्वागतम्

(iv) मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

(v) लृ + आकृतिः = लाकृतिः

वृद्धिसन्धिः

'अ' या 'आ' के आगे 'ए' अक्षर आ जाय तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है। उसे वृद्धि एकादेश कहते हैं; दोनों के स्थान पर एक नए वर्ण 'ऐ' का आदेश होता है। इसी प्रकार अ, आ के बाद 'ऐ', 'ओ' एवं 'औ' आने पर अधोलिखित एकादेश होते हैं–

अ + ए = ऐ		अ + ओ = औ	
आ + ए = ऐ		आ + ओ = औ	
अ + ऐ = ऐ		अ + औ = औ	
आ + ऐ = ऐ		आ + औ = औ	
उदाहरण–	एका + एव = एकैव;	अद्य + एव	= अद्यैव
	सदा + एव = सदैव,	तदा + एव	= तदैव
	परम + ओषधिः = परमौषधिः	गंगा + ओघः	= गंगौघः

अयादि सन्धिः

यदि ए, ऐ, ओ अथवा औ के बाद कोई स्वर सामने हो तो ए का अय्, ऐ का आय्, ओ का अव् तथा औ का आव् हो जाता है।

भे	+ अ	= भ्	ए	+ अ	= भ्	अय्	+ अ	=	भय
हरे	+ ए	= हर्	ए	+ ए	= हर्	अय्	+ ए	=	हरये
भानो	+ ए	= भान्	ओ	+ ए	= भान्	अव्	+ ए	=	भानवे
नै	+ अकः	= न्	ऐ	+ अकः	= न्	आय्	+ अकः	=	नायकः
पौ	+ अकः	= प्	औ	+ अकः	= प्	आव्	+ अकः	=	पावकः

पाठान्तप्रश्नाः

1. 'क' स्तम्भे पशुपक्षिवृक्षादीनां नामानि सन्ति। 'ख' स्तम्भे तेभ्यः प्राप्ताः शिक्षाः लिखिताः। पशुपक्षिणां गुणैः सह मेलनं करोतु

टिप्पणी

'क'		'ख' स्तम्भः	
(i)	सिंहः	(क)	स्वामिभक्तिः
(ii)	बकः	(ख)	सन्तापहरणम्
(iii)	श्वा	(ग)	उत्साहः
(iv)	गर्दभः	(घ)	इन्द्रियसंयमः
(v)	षट्पदः	(ङ.)	अविश्रमं कार्यशीलता
(vi)	चन्दनवृक्षः	(च)	सारग्रहणम्

2. अधोलिखितेषु अन्वयेषु रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम्

(i) अणुभ्यः महद्भ्यश्च शास्त्रेभ्यः.....1.....नरः सर्वतः..... 2.....आदद्यात्.....3.....षट्पदः.....4..... .....।

(ii) विद्वान्.....1.....न चलेत्।.....2.....व्रतम् अन्वशिक्षम्।

(iii) यद्यपि.....1.....विधिना फलकुसुमविवर्जितः.....2..... ..तथापि निजवपुषा एव.....3.....सन्तापम्.....4..... .....

3. शुद्धभावार्थं चिनुत।

(i) अन्वशिक्षम् क्षितेः व्रतम्।

(अ) अहम् पृथिव्याः व्रतपालनम् अशिक्षम्।

(ब) मया पृथिव्याः प्रतिज्ञा अवगता।

(स) पृथिवी व्रतोपवासं करोति।

(द) पृथिवी स्वमार्गे परिभ्रमति।

(ii) सर्वारम्भेण तत्कुर्यात्

(अ) सर्वेषां कार्याणाम् आरम्भः करणीयः।

(ब) हठपूर्वकं सर्वं कार्यं करणीयम्।

(स) तत् कार्यं पूर्ण + उत्साहेन करणीयम्।

(द) नरः सर्वदा प्रभूतं कार्यं कुर्यात्।

(iii) गर्दभात् त्रीणि कानि शिक्षेत

(अ) विश्रामः, शीतोष्णसहनम् सन्तोषः

(ब) भारवहनम्, शीतसहनम्, सन्तोषः

(स) सन्तोषः, विश्रामं विना सततं कार्यशीलता, शीतोष्णसहनम्

(द) शीतोष्णसहनम्, भारवहनम्, असन्तोषः

4. एतत् अव्ययं नास्ति

(क) यद्यपि (ख) प्रभूतम्

(ग) सह (घ) सर्वतः

5. कुत्र पञ्चमीविभक्तिः नास्ति?

(क) कुक्कुरात् (ख) महद्भ्यः

(ग) मार्गात् (घ) कुर्यात्

6. कुत्र क्रियापदं नास्ति

(क) रक्षेत् (ख) चलेत्

(ग) शिक्षेत (घ) मार्गात्

उत्तरतालिका

बोधप्रश्नाः

1. क. सर्वारभ्भेण, ख. एकम्, ग. संयम्य, घ. षट्, ङ. बन्धुभिः,
2. (i) + ग, (ii) + ङ, (iii) + घ, (iv) + ख, (v) + क
3. (i) स्ववपुषैव, (ii) सारम्, (iii) मार्गात्, (iv) भारम् (v) सत्पुरुषाः

पाठगतप्रश्नाः 4.1

1. (i) √, (ii) x, (iii) √, (iv) √, (v) x
2. (2)

टिप्पणी

पाठगतप्रश्नाः 4.2

1. (ग)
2. (क) सारम्, (ख) मार्गाद्, (ग) बन्धुभिः,(घ) व्रतम्,
3. (क) स्ववपुषा एव,(ख) रसम्, (ग) मार्गात् न प्रविचलेत्, (घ) आम्।

पाठान्तप्रश्नाः 4.3

1. (i) + ग, (ii) + घ, (iii) + क, (iv) + ङ, (v) + च, (vi) + ख,
2. (i) 1. कुशलः, 2. सारम्, 3. पुष्पेभ्यः, 4. इव

   (ii) 1. मार्गात्, 2. क्षितेः

   (iii) 1. चन्दनविटपः, 2. विहितः, 3. परेषाम्, 4. अपहरति।
3. (i) अ, (ii) स, (iii) स
4. ख
5. घ
6. घ